ORIGINAL ARTICLE ISSN:- 2231-5063

Golden Research Thoughts

सारांश

आदिकाल की उपलब्ध सामग्री में सबसे अधिक संख्या जैन ग्रंथों की हैं। जैन साहित्य अधिकांशतः अपभ्रंश भाषा में लिखा गया है। भाषा एवं साहित्य की विकास यात्रा में जर्मन विद्वान रिचर्ड पिशेल एवं हरमन याकोबी ने अपभ्रंश पर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। रिचर्ड पिशेल को अपभ्रंश का 'पाणिनी' कहते हैं। याकोबी ने कवि धनपालकी कृति 'भविसयत् कहा' को प्रकाश में लाया। अनेक भारतीय विद्वानों का इस क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान है।

[1]प्रभावती कोठारी , [2]शकुन्तला जैन

[1]सहा. प्राध्यापक (हिन्दी) शा. कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,रतलाम (म.प्र.)
[2]प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष शा. कन्या महाविद्यालय, झाबुआ (म.प्र.)

अपभ्रंश जैन काव्य परंपरा : प्रमुख कवि एवं रचनाए

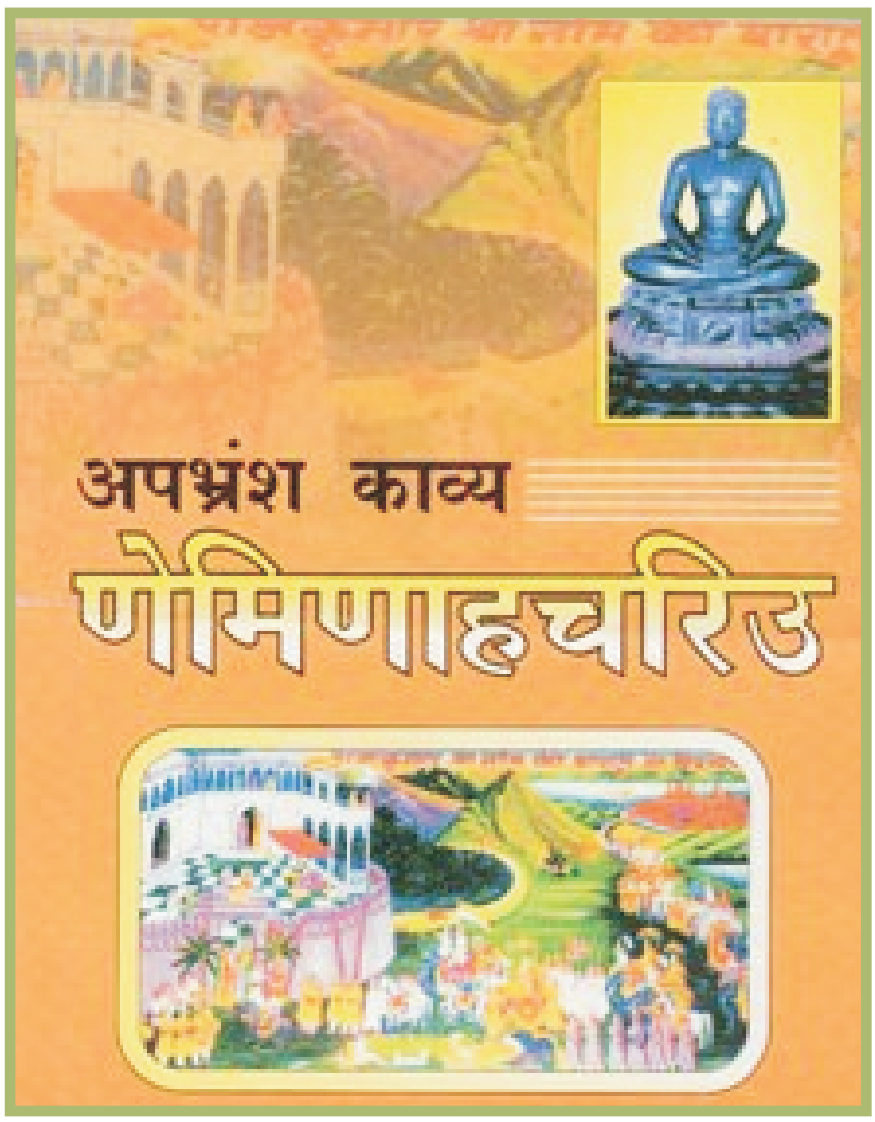

प्रस्तावना :

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. राहुल सांकृत्यायन आदि पर विद्वानों ने अपभ्रंश को हिन्दी साहित्य में परिगणित करने परबल दिया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का मत है अपभ्रंश भाषा की छोटी से छोटी रचना भी हिन्दी के विकास में महत्त्वपूर्ण है। आदिकालीन साहित्य में अपभ्रंश जैन काव्यधारा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस काल में जैन धर्म की दोनों शाखाएं दिगम्बर एवं श्वेताम्बर अपने धर्मप्रचार में सक्रिय थीं। श्वेताम्बर जैन साधुओं, कवियों और विद्वानों का क्षेत्र अधिकतर राजस्थान और गुजरात रहा है, दिगम्बरसाधुओं और कवियों का क्षेत्र दक्षिण भारत एवं मध्यप्रदेश रहा है। अब तक उपलब्ध जैन साहित्यअधिकांश रूप में राजस्थान और गुजरात से प्राप्त हुआ है। डॉ. नरेन्द्र भानावत का कथन है– 'जैन साहित्यकार सामान्यतः साधक और सन्त रहे हैं। साहित्य उनके लिए विशुद्ध कला की वस्तु कभी नहीं रहा, वह धार्मिक आचार की पवित्रता और साधना का एक अंग बनकर आया है। यही कारण है कि अभिव्यक्ति में सरलता, सुबोधता और सहजता का सदा आग्रह रहा है।'[1]

जैन कवियों ने आचार, रास, फागु, चरित आदिविभिन्न शैलियों में काव्य लिखा है, लेकिन जैन साहित्य में सबसे अधिक लोकप्रिय 'रास' ग्रंथ माने जाते हैं। अपभ्रंश जैन काव्य परंपरा के प्रमुख कवि एवं रचनाएं जैन साहित्य काव्य परंपरा के आज प्रचुर मात्रा में ग्रंथ उपलब्ध हैं। कुछ प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएं निम्नलिखित हैं – [2]

❖ ***स्वयंभू कवि :*** 'स्वयंभू सबसे पहले अपभ्रंश कवि हैं, जिनका साहित्य उपलब्ध है।[2]स्वयंभू की कुल तीन रचनाएं उपलब्ध हैं– पउम चरिउ, रिट्ठणेमि चरिउ और स्वयंभू छन्द। इनकी कुछ अधूरी रचनाओं को इनके पुत्र त्रिभुवन स्वयंभू ने पूराकिया। इनका समय लगभग 790 ईसवी माना जाता है। कवि को काव्यगत धार्मिक प्रसंगों की पहचान है। राहुल सांकृत्यायन ने 'पउम चरिउ' को हिन्दी का पहला रामायण कहा है। इसमें राम बलदेव, लक्ष्मण वासुदेव एवं रावण प्रतिवासुदेव के रूप में चित्रित हैं। स्वयंभू उदार गृहस्थ थे। नारी के प्रतिसामन्तवादी दृष्टिकोण से व्यवहार करने वालों की उन्होंने कटु आलोचना की है। मानवीय प्रसंगों और संबंधों के साथ स्वयंभू ने प्रकृति का भी सुन्दर वर्णन किया है।

इनके काव्य की भाषा सामान्य भाषा (साहित्यिक अपभ्रंश) है। स्वयंभू ने भी स्वीकार किया है कि उनकी भाषा सामान्य अपभ्रंश है जो ग्राम्य भाषा से रहित है।

❖ ***कवि पुष्पदंत :*** इनकी चार रचनाएं उपलब्ध हो चुकी हैं।

1) महापुराण – इस काव्य ग्रंथ के दो खण्ड है – आदि पुराण एवं उत्तर पुराण। आदि पुराण में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का एवं उत्तर पुराण में शेष तैंतीस तीर्थंकरों का
चरित्र वर्णित है।
2) जसलर चरिउ – इस काव्य में यशोधरा का चरित्र वर्णित है।
3)णयकुमार चरिउ – इस काव्य में नागकुमार संबंधी वर्णन है।
4) कोष – यह देश भाषा का कोष ग्रंथ है।

पुष्पदंत 10 वीं शताब्दी के कवि है। इस समय सामन्तवाद का प्रभाव कम होता जा रहा था। पुष्पदंत प्रकृति और मानव सौन्दर्य के कुशल चितेरे हैं। वे अनुभूति, कल्पना एवं शिल्प के सम्राट हैं। महापुराण में भारतीय अध्यात्म और अभिजात्य संस्कृति का सम्पूर्ण चित्र अंकित है।

❖ ***धनपाल :*** कवि धनपाल की एकमात्र रचना है– 'भविसयत् कहा'। सामान्यतः इसका रचनाकाल दसवीं सदी है। अभी तक उपलब्ध अपभ्रंश काव्यों में जो चरित काव्य हैं उन के नायक शलाका पुरूषहै; परन्तु 'भविसयत् कहा' के नायक भविष्यदत्त का नाम श्रेष्ठ शलाका पुरुषों में नहीं है। भविष्यतः शलाका पुरुषों में नहीं है लेकिन उनकी श्रेणी का पात्र है। भविष्यत के प्रारम्भिक जीवन में कठिनाइयां हैं; परन्तु बाद में अपने पुण्य और जिनवर की भक्ति से जो ऋद्धि और यश प्राप्त होता है, वह किसी शलाका पुरुष से कम नहीं है। कथा का मूल उद्देश्य श्रुतपंचमी के व्रत का महत्त्व प्रतिपादन करना है।

❖ ***मुनि कनकामर :*** 'करकंडचरिउ' इनकी रचना है। ये दिगम्बर जैन मुनि है। 'करकंडचरिउ' का सम्पादन डॉ. हीरालाल जैन ने किया है। इस काव्यका उद्देश्य पंचकल्याणक विधि के महत्व को प्रतिपादन करना है। इसका समय 11 वीं सदी है।

❖ ***हरिभद्र सूरि :*** इनकी रचना 'नेमिनाह चरिउ' है। इसग्रंथ की रचना गुजरात के राजा कुमारपाल के शासन में हुई। इसका रचनाकाल 1166 ईसवी है। इस काव्य में स्वतन्त्र छन्दों का प्रयोग है। कुल नौ खण्ड है जिनमें नेमिजिन के पूर्व भवों के चित्रण के पश्चात नेमिनाथ एवं राजुल की कथा वर्णित है।

❖ ***जिनदत्त सूरि :*** ये अत्यन्त उदार सन्त थे, इन्हों ने खूब परिभ्रमण किया। इनकी तीन रचनाएं उपलब्ध हैं– चर्चरी उपदेश, रसायन रास और कालस्वरूप कुलकम। इनका समय 11 वीं सदी है।

❖ ***आचार्य देवसेन :*** इनका प्रसिद्ध ग्रंथ 'श्रावकाचार' है। जिसमें श्रावक धर्म का प्रतिपादन किया गया है। देवसेन आचार्य जैनियों के उच्च कोटि के चिन्तक माने जाते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है– 'संवत 990 में देवसेन नामक एक जैन ग्रंथकार हुए हैं। उन्होंने 'श्रावकाचार' नाम की एक पुस्तक दोहों मे बनायी थी, जिसकी भाषा अपभ्रंश का अधिक प्रचलित रूप लिए हुए हैं।'[3]

' उदाहरण –

''जो जिण सासण भावियउ सो मइ कहियउ सारू।
जो पालई सइ भाउ करि सो सो सरि पावइ पारू।।''

आचार्य देवसेन के अन्य ग्रंथ 'दब्ब–सहाव–प्रयास' (द्रव्य–स्वभाव–प्रकाश), लघुचयनक, दर्शनाचार आदि हैं।

❖ ***शालिभद्र सूरि :*** 'हिन्दी में रासो परम्परा का प्रवर्तन जैन साधु श्री शालिभद्र सूरि द्वारा रचित 'भरतेश्वर बाहुबली रास' से होता है ।'[4] इस काव्य का रचनाकाल 1184 ई. है। यह एक कथात्मक खण्ड प्रबन्ध है, जिसमें जम्बूदीप के अयोध्या नगर के राजा ऋषभ जिनेश्वर के दो पुत्रों भरत एवं बाहुबली की कथा के माध्यम से अहिंसा और निर्वेद का महत्त्व स्पष्ट किया गया है। इसका संपादन एवं प्रकाशन मुनि जिनविजय द्वारा चार पाँच सदी पूर्व की प्राचीन पांडुलिपि के आधार पर किया गया है। लालचंद गाँधी ने भी इसका संपादन किया है। प्रारम्भ में कवि ने जिनेश्वर, सरस्वती के चरणों में नमस्कार किया है। भरत और बाहुबली के युद्ध की परिणती अन्त में बड़ी सरलता से शान्त रस में होती है। जब बाहुबली युद्ध से विरक्त होकर संन्यास ले लेते हैं तो भरतेश्वर कहते हैं–

''धिग–धिग। ए एय संसार, धिग–धिग। राणिम राज सिद्धि,
एवडु ए जीव संहार, कीधउ गुण विरोधवसि'

पात्रों के संवाद, वस्तु वर्णन, अभिव्यंजना, शैली एवं छन्द योजना की दृष्टि से यह रचना रोचक, आकर्षक तथा वैविध्यपूर्ण है। विभिन्न प्रकार के अलंकारों अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक आदि का निरूपण आकर्षक रूप में हुआ है। इनकी दूसरी रचना 'बुद्धिरास' है, जिसमें जैन धर्म की शिक्षाएं हैं।

❖ ***कवि आसगु :*** आसगु कविकृत दो काव्य 'चन्दनबाला रास' एवं 'जीवदया रास' है। इन कृतियों का रचनाकाल 1200 ईसवी के आसपास माना जाता है। चन्दनबाला रास में चन्दनबाला की चारित्रिक पवित्रता एवं धार्मिक साधना का वर्णन करते हुए जैन धर्म की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। लघु कथानक पर आधारित यह जैन रचना करुण रस की गंभीर व्यंजना करती है।'[5]

चन्दनबाला चंपा नगरी के राजा दधिवाहन की कन्या थी। कोशम्बी के राजा शनानिक ने चंपा पर युद्ध कर दिया था। अतः माता धारिणी के साथ चन्दनबाला को शत्रु राजा का सैनिक उनके रूप पर मोहित होकर ले जाता है। शील की रक्षा के लिए माँ धारिणी प्राण त्याग देती है। सैनिक चंदनबाला को धर्मनिष्ठ सेठ धनवाह को बेच देता है। अनेक कष्टों को सहती हुई चंदनबाला अपने संयम एवं धर्म पर अटल रहती है। अन्त में भगवान महावीर को दान देने के पश्चात दीक्षित हुई और कैवल्य ज्ञान को प्राप्त कर सिद्ध बुद्ध मुक्त हुई। कवि का दृष्टिकोण मूलतः धार्मिक है लेकिनशृंगार रस का वर्णन भी अद्‌भुत हुआहै। पूरी रचना में काव्यात्मकता है।
रानी धारिणी के सौन्दर्य का वर्णन दृष्टव्य है –

दधिवाहण गेहिणी सु पाहिणी, रूपवन्त सा धारिणी राणी।
तुंग पयोहर खीर सर कुं डित केस भुय नयण सुचंगी।
हंस गमणि सा मृग नयणि नव जोवण नव नेह सुरंगी।'

❖ ***जिनधर्म सूरि :*** कवि जिनधर्म सूरि की रचना 'स्थूलभद्ररास' 1209 ईसवी की है। धार्मिक दृष्टि से प्रेरित होने के बावजूद इस कृति की भावभूमि और अभिव्यंजना काव्यानुकूल है। इससे जैन मुनि स्थूलभद्र की संयमशीलता का प्रतिपादन प्रभावोत्पादक रूप में किया गया है। मुनिराज चातुर्मास व्यतीत करने के लिए अद्‌भुत सुंदरी वेश्या कोशा केयहाँ ठहरते हैं। यद्यपि वेश्या उन्हें आकर्षित करने के लिए अनेक प्रयास करती है। लेकिन मुनिवर संयम पर अडिग रहते हैं। स्थूलभद्र मुनि के संपूर्ण जीवन का चित्रण काव्य में रोचक ढ़ंग से कवि ने किया है।

❖ ***विजयसेन सूरि :*** 'रेवंतगिरि रास' इनकी प्रसिद्ध काव्य कृति है। इसमें तीर्थंकर नेमिनाथ की प्रतिमा एवं रेवंतगिरि का मनोरम वर्णन है। कवि का दृष्टिकोण धार्मिक है, फिर भी प्रकृति सौन्दर्य की सहज स्वाभाविक झलक मिलती है। शैली में अलंकारिकता है।

❖ ***सुमति गणि :*** 'नेमिनाथ रास' इनकी रचना है। रचनाकाल 1213 ईसवी है। तीर्थंकर नेमिनाथ के चरित्र का वर्णन अत्यन्त संक्षेप में किया गया है। नायक के पराक्रम, विवाह, वैराग्य, तपस्या आदि से संबंधित प्रसंगों का वर्णन प्रभावोत्पादक शैली में हुआ है। नेमिनाथ द्वारा परित्यक्त सुन्दरी राजुल के बाह्य सौन्दर्य एवं मनोभावों का सुन्दर वर्णन है।

❖ विनयचन्द्र सूरि : इनकी रचना 'नेमीचन्द चउपई' है। यह रचना अपभ्रंश साहित्य के बारह मासाकाव्य की अनूठी कृति है। इसका रचनाकाल 1200 ईसवी माना जाता है। नेमिनाथ एवं राजुल दोनों ही दीक्षा लेकर मोक्ष को प्राप्त होते हैं

❖ हेमचन्द्र सूरि : इनके द्वारा रचित ग्रंथ है– अभिधान, चिन्तामणि, काव्यानुशासन, छन्दानुशासन, देशी नाम माला, द्वयाश्रय काव्य, योगशास्त्र, धातु पारायण, त्रिसृष्टि शलाका पुरुष चरित्र, परिशिष्ट पर्व और शब्दानुशासन। इनका जन्म नाम अंगदेव था। दीक्षा के बाद हेमचन्द्र सूरि नाम हुआ। गुजरात नरेश सिद्धराज जयसिंह सोलंकी एवं उनके भतीजे राजा कुमारपाल ने हेमचन्द्र की विशेष प्रतिष्ठा की। हेमचन्द्र सूरि को हिन्दी का 'पाणिनी' पतंजलिएवं भट्‌टी कहा जाता है। डॉ. पुरुषोत्तमलालमेनारिया का कथन है– ''आचार्य हेमचन्द्र ने अपनेव्याकरण में अपने पूर्व समय के प्रचलित अनेक

उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। राजस्थानी काव्य की समस्त विशेषताएं इन उदाहरण में मूल रूप में विद्यमान हैं, इसलिए इनका विशेष महत्त्व है।[6]

उदाहरण –

भल्ला हुआ जा मारिआ, बहिणि म्हारा कन्तु
लज्जेज्ज तु वयंसिअहु, जइ भग्गा घर अन्तु
वायसु उड्डवन्ति अए, पिउ दिट्ठउ सहसनि।
अदावलया महहि गय, अद्दा फुड्ड तडलि
पुतें जाए कवणु गुणु अवगुणु कवण मुएण
जा वाणी की मुंहणी, चम्पिज्जई अवरेण।

मुनि जिनविजय ने हेमचन्द्र साहित्य पर कठोर परिश्रम करके सराहनीय कार्य किया है। कन्हैयालाल मुंशी ने कहा है वे शलाका पुरुष थे जिन्होंने ज्ञान का अंजन युगों तक लगाया है। डॉ. राहुल सांकृत्यायन ने हेमचन्द्र सूरि को 'कलिकाल सर्वज्ञ' कहा है। गुजरात के डॉ. बलवन्त भाई जानी ने इनके साहित्य को शाश्वत एवं सनातन कहा है। वे बहुविधा शाखा के ज्ञाता, बहुभाषा के विद्वान, बहुआयामी व्यक्तित्व वाले कवि व्याकरणाचार्य, इतिहासकार एवं भाषा विज्ञानी थे।

राजशेखर सूरि द्वारा रचित 'नेमिनाथ फागु', रल्ह कवि द्वारा रचित जिनदत्त चौपाई,विनयप्रभसूरि का गौतम रास, धर्मसूरि कृत जम्बू स्वामी रास, पल्हण कवि कृत नेमी बारह मासा एवं आबूरास, जिनपद्मसूरि का स्थूलिभद्रफाग आदि रचनाओं के अतिरिक्त भी अन्य जैन काव्य है जिनकी पांडुलिपियां प्राप्त हुई हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी साहित्य के विकास एवं इतिहास में अपभ्रंश जैन काव्य परंपरा का महत्त्वपूर्ण एवं विशिष्ट योगदान रहा है।

सन्दर्भ संकेत

1) राजस्थान का जैन साहित्य, लेखक डॉ. नरेन्द्र भानावत, पृष्ठ संख्या 20 भूमिका से
2) अपभ्रंश और हिन्दी, लेखक डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन पृष्ठ संख्या 3
3) हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ संख्या 3
4) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, (प्रथम भाग), लेखक डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, पृष्ठ संख्या 96
5) हिन्दी भाषा साहित्य का इतिहास एवं काव्यां ग विवेचन, लेखक डॉ. विभा शुक्ला, डॉ वीरेन्द्र मोहन, डॉ. उषा प्रधान, पृष्ठ संख्या 79
6) राजस्थानी साहित्य का इतिहास, लेखक डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृष्ठ संख्या 30
7) हिन्दी साहित्य का इतिहास, लेखक डॉ. गोविन्द चातक, प्रो. राजकुमार शर्मा, पृष्ठ सं ख्या 16